केवल सृष्टि होना पर्याप्त नहीं है — दो और बातें आवश्यक
हैं

जैसा कि इस शिक्षण के शीर्षक से स्पष्ट है: “केवल सृष्टि होना पर्याप्त नहीं है।”

दूसरे शब्दों में कहें तो, परमेश्वर की सृष्टि को अपनी पूरी योजना और उद्देश्य तक पहुँचने के लिए कुछ और आवश्यक कदमों की भी ज़रूरत है। आइए इन आवश्यक कदमों को विस्तार से समझते हैं।

सबसे पहले बाइबल का आरंभिक पद हमें सृष्टि की नींव को प्रकट करता है:

उत्पत्ति 1:1
“आदि में परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी की सृष्टि की।” (ERV-
HI)

यहाँ परमेश्वर को सृष्टिकर्ता के रूप में प्रस्तुत किया गया है — वह जिसने ब्रह्मांड को शून्य से उत्पन्न किया। परंतु जब हम आगे पढ़ते हैं, तो देखते हैं कि यह सृष्टि तत्काल पूर्ण और कार्यशील स्थिति में नहीं थी। इसीलिए अगला पद कहता है:

केवल सृष्टि होना पर्याप्त नहीं है — दो और बातें आवश्यक
हैं

उत्पत्ति 1:2
“पृथ्वी सुनसान और उजाड़ थी, और गहरा सागर अंधकारम

य था…” (ERV-HI)

इस “सुनसान और उजाड़” स्थिति को इब्रानी में “तोहु वावोहु” कहा गया है, जिसका अर्थ है — व्यर्थ और शून्य। यह एक अराजक और रहने योग्य न होने वाली स्थिति थी। और वह अंधकार – आत्मिक रिक्तता का प्रतीक था, जहाँ परमेश्वर की उपस्थिति नहीं थी। लेकिन परमेश्वर ने सृष्टि को इस स्थिति में नहीं छोड़ा।

दो ईश्वरीय कार्य

परमेश्वर ने दो महत्वपूर्ण कार्य किए जिससे सृष्टि अपनी उद्देश्य की ओर बढ़ सकी:

1. परमेश्वर का आत्मा जलों के ऊपर मँडराया
रूआख एलोहिम – परमेश्वर का आत्मा – कोई निराकार शक्ति नहीं, बल्कि परमेश्वर की जीवित और सक्रिय उपस्थिति है। आत्मा जीवन, नवीकरण और परमेश्वर की उपस्थिति का

केवल सृष्टि होना पर्याप्त नहीं है — दो और बातें आवश्यक
हैं

प्रतीक है।
उत्पत्ति 1:2 (दूसरा भाग)
“…और परमेश्वर का आत्मा जलों के ऊपर मँडराता था।” (ERV-HI)
2. परमेश्वर का वचन बोला गया
परमेश्वर का वचन – उसकी सक्रिय अभिव्यक्ति – अंधकार में व्यवस्था और जीवन लाता है।
उत्पत्ति 1:3
“तब परमेश्वर ने कहा, ‘उजियाला हो,’ और उजियाला हो गया।” (ERV-HI)

इन दो कार्यों – आत्मा और वचन – के माध्यम से सृष्टि में उद्देश्य और जीवन का आरंभ हुआ।

वचन और आत्मा का महत्व

यूहन्ना 1:1–5
“आदि में वचन था, और वचन परमेश्वर के साथ था, और वचन ही परमेश्वर था।
वही आदि में परमेश्वर के साथ था।
सब कुछ उसी के द्वारा उत्पन्न हुआ; और उसके बिना कुछ भी उत्पन्न नहीं हुआ जो हुआ।
उसमें जीवन था; और वह जीवन मनुष्यों की ज्योति थी।
यह ज्योति अंधकार में चमकती है, और अंधकार ने इसे ग्रहण नहीं किया।” (ERV-HI)

केवल सृष्टि होना पर्याप्त नहीं है — दो और बातें आवश्यक
हैं

यूहन्ना स्पष्ट करता है कि यह “वचन” (यूनानी में लोगोस) कोई और नहीं, स्वयं यीशु मसीह है। वह न केवल बोला गया वचन है, बल्कि अनादि काल से परमेश्वर के साथ विद्यमान और स्वयं परमेश्वर है। उसी के द्वारा सब सृष्टि हुई।

यीशु वही ज्योति है जो अंधकार पर विजय पाती है। यह ज्योति न केवल ज्ञान और सच्चाई है, बल्कि जीवन की विजय का प्रतीक है – पाप और अराजकता पर प्रभुत्व।

इसका अर्थ यह है कि यीशु, जो परमेश्वर का अनन्त वचन है, सृष्टि के केंद्र में है। शारीरिक हो या आत्मिक – कोई भी सृष्टि तब तक पूर्ण नहीं होती जब तक उसमें मसीह का वचन न हो।

परमेश्वर का आत्मा और नई सृष्टि

रोमियों 8:9
“परन्तु तुम शरीर में नहीं, आत्मा में हो, यदि सचमुच
परमेश्वर का आत्मा तुम में निवास करता है। यदि किसी में
मसीह का आत्मा नहीं है, तो वह मसीह का नहीं है।” (ERV-HI)

पवित्र आत्मा केवल एक शक्ति नहीं, बल्कि त्रित्व का तीसरा

केवल सृष्टि होना पर्याप्त नहीं है — दो और बातें आवश्यक
हैं

व्यक्ति है। वही है जो हमें नया जीवन देता है, हमारे भीतर आत्मिक पुनर्जन्म करता है। पौलुस स्पष्ट कहता है कि यदि किसी में मसीह का आत्मा नहीं है, तो वह मसीह का नहीं है। अर्थात आत्मा के बिना कोई मसीही नहीं हो सकता, और वचन (यीशु) के बिना कोई परमेश्वर की इच्छा को पूरी तरह नहीं जान सकता।

इसीलिए यीशु ने कहा कि मनुष्य को पुनः जन्म लेना आवश्यक है ताकि वह परमेश्वर के राज्य को देख सके और उसमें प्रवेश कर सके (देखें: यूहन्ना 3:5–6)। आत्मा ही हमें परमेश्वर से जोड़ता है और हमें उसकी स्वभाविक संगति में लाता है (देखें: 2 पतरस 1:4).

नया जन्म क्यों आवश्यक है?

यूहन्ना 3:3
“यीशु ने उत्तर दिया, ‘मैं तुमसे सच कहता हूँ, यदि कोई नए
सिरे से जन्म न ले, तो वह परमेश्वर के राज्य को देख ही नहीं सकता।’” (ERV-HI)

नया जन्म वह आत्मिक पुनर्जन्म है जो तब होता है जब कोई व्यक्ति यीशु मसीह को अपने उद्धारकर्ता और प्रभु के रूप में स्वीकार करता है। इस जन्म के द्वारा ही मनुष्य को पापों की क्षमा मिलती

केवल सृष्टि होना पर्याप्त नहीं है — दो और बातें आवश्यक
हैं

है और वह मसीह में नई सृष्टि बनता है:

2 कुरिन्थियों 5:17
“इसलिए यदि कोई मसीह में है, तो वह नई सृष्टि है; पुरानी बातें जाती रहीं, देखो, वे सब नई हो गई हैं।” (ERV-HI)

यह कार्य पवित्र आत्मा के द्वारा संपन्न होता है। उसके बिना मनुष्य आत्मिक रूप से मृत और परमेश्वर से अलग रहता है। जब तक वचन (यीशु) और आत्मा दोनों सक्रिय न हों, कोई भी व्यक्ति पूरी तरह से नया और सिद्ध नहीं बन सकता।

निष्कर्ष: मसीह में उद्धार

इफिसियों 2:8–9
“क्योंकि तुम्हें विश्वास के द्वारा अनुग्रह से उद्धार
मिला है; यह तुम्हारी ओर से नहीं, यह परमेश्वर का वरदान है;
और यह कर्मों के कारण नहीं है, कि कोई घमण्ड न करे।” (ERV-HI)

उद्धार परमेश्वर का दिया हुआ उपहार है — जो मसीह यीशु के

केवल सृष्टि होना पर्याप्त नहीं है — दो और बातें आवश्यक
हैं

अनुग्रह से हमें प्राप्त होता है। परंतु उद्धार केवल सृष्टि में होने, या अनुग्रह प्राप्त करने से नहीं होता; इसका अर्थ है यीशु मसीह को अपने उद्धारकर्ता और प्रभु के रूप में ग्रहण करना। बाइबल सिखाती है कि हमें आत्मा के द्वारा नया जन्म लेना है और मसीह में पूर्ण होना है।

यह संदेश अत्यंत आवश्यक है क्योंकि हम अंत समय में जी रहे हैं। मसीह का पुनः आगमन निकट है और संसार अपनी अंतिम दिशा की ओर बढ़ रहा है।

तो यह प्रश्न आपके सामने है:
क्या आप स्वर्ग में मेम्ने के विवाह भोज के लिए तैयार हैं?
आप परमेश्वर की दृष्टि में कितने पूर्ण हैं?

ईश्वर आपको आशीष दे!

JIUNGE NA GROUP LETU LA WHATSAPP HAPA >> WHATSAPP GROUP….

Share on:
WhatsApp